International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 12, December 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसारशिक्षण की नवीन विधियाँ

शोधार्थी

तरूणा माथुर

शोध पर्यवेक्षक

डॉ. रजनीश शर्मा

संगम विश्वविधालय, भीलवाड़ा (राज.)

सारांश

शिक्षा अनवरत चलने वाली प्रक्रिया है तथा शिक्षा औपचारिक व अनौपचारिक माध्यमों से प्रदान की जाती हैं जब बालकों को शिक्षा एक ही परम्परागत तरीके से प्रदान की जाती है तो वह अरूचिकर हो जाती है। अतः शिक्षा पद्घति में समय समय पर सुधार आवश्यक है। इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर हमारी सरकार ने नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की घोषणा की है। जिसके द्वारा हमारी शिक्षा में अमूल चूल परिवर्तन किये गये है। परम्परागत शिक्षण विधियोंमें विषय वस्तु को बालकों के सम्मुख प्रस्तुत किया जाता था। यह विधियां अध्यापक केन्द्रित होती थी। छात्र निष्क्रिय श्रोता के रूप में होताहै साथ ही शिक्षा के उद्घेश्य भी स्पष्ट नहीं होते थे। इसके साथ मूल्याकंन में वस्तुनिष्ठता की कमी रहती है और परम्परागत शिक्षण विधियों में व्यावहारिकता व मनोविज्ञान व व्यक्तिगत विभिन्नता की भी कमी है। इन सब कमियों को ध्यान में रखकर हमारी नई शिक्षा नीति में कई प्रकार के प्रावधान रखे गये है। नई शिक्षा नीति में विषय वस्तु के शिक्षण के स्थान पर सीखने को अधिक महत्व दिया गया है। इस शिक्षा नीति ने शिक्षा को व्यावहारिक रूचिकर, कौशल आधारित रूप प्रदान किया है। जिसके अन्तर्गत नवीन शिक्षण विधियों का प्रयोग करके विषय वस्तु को सजीव, प्रयोग आधारित, कौशल निपुणता रूचिकर बना सकते है। नवीन शिक्षण

विधियों से प्राप्त ज्ञान स्थायी, प्रभावी व जीवन में काम आने वाला होगाव गुणवत्ता पूर्ण बनाने का भरसक प्रयास किया गया है।

नई शिक्षा नीति के अन्तर्गत बहु विषयक संस्था के निर्माण पर बल दिया गया है जिसमें छात्र की रूचि को ध्यान में रखा गया है।राष्ट्रीय शिक्षा नीति में निम्न प्रभावी नवीन विधियों के प्रयोग पर बल दिया गया है जैसे वर्चुअल टेक्नोलॉजी, प्रोजेक्ट बेस्ट लर्निंग, इन्क्वायरी बेस्ट लर्निंग, जिग्सॉ ब्लेन्डेड लर्निंग, साफ्ट स्किल आदि। इस शिक्षा नीति में इनके प्रयोग से शिक्षण को सरल, प्रभावी, व्यावहारिक, कौशल आधारित व जीवन के लिये उपयोगी बनाने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तावनाः—

भारतीय शिक्षा में सुधार के लिये व विकास की सम्भावनाओं को ध्यान में रखकर समय समय पर कई शैक्षिक सुधार के मसौदे तैयार व प्रस्तुत किये गये । इसीश्रृखंला में 2014 के आम चुनाव में भारतीय जनता पार्टी के चुनावी घोषणा पत्र में एक नवीन शिक्षा नीति बनाने का विषय शामिल था। 2019 में मानव संसाधान विकास मंत्रालय ने नई शिक्षा नीति के लिये जनता से सलाह मांगना शुरू किया गया था और नई शिक्षा नीति 2020 भारत की शिक्षा नीति के रूप में 29 जुलाई 2020 को घोषित कर दी गई। यह शिक्षा नीति अंतरिक्ष वैज्ञानिक के० कस्तुरीरंगन की अध्यक्षतावाली समिति की रिपोर्ट पर आधारित है।

नई शिक्षा नीति का उद्घेश्य भारत में स्कूल और उच्च शिक्षा प्रणाली में सुधार करना है। साथ ही श्'मानव संसाधन विकास मंत्रालयश' कानाम अब शिक्षा मंत्रालय कर दिया गया। इस शिक्षा नीति का लक्ष्य देश को विश्व स्तरीय और कौशल आधारित शिक्षा प्रदान करना है। इस नीति से छात्रों की संज्ञानात्मक क्षमताओं, समस्या— समाधान दृष्टिकोण को उजागर करने का प्रयास है। इस शिक्षा नीति के माध्यम से भारत को ज्ञान की वैश्विक महाशक्ति बनाने के लिये भारत सरकार की

बड़ी पहल है। इस शिक्षा नीति का दृष्टिकोण एक ऐसी शिक्षा प्रणाली प्रदान करना है जोदेश को एक जीवंत ज्ञान समाज के रूप में स्थायी रूप से बदल दे और सभी को उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान कर सके।

नई शिक्षा नीति के अनुसार नवीन विधियाँः–

नई NEPका उद्घेश्य बालको में 21 वीं सदी के कौशल विकसित करना और हमारे देश की शिक्षा को अधिक समावेशी और लचीला बनाना है। साथ ही शिक्षक इन लक्ष्यों को प्राप्त करने का साधन है। भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति की सफलता में शिक्षकों का महत्वपूर्ण भूमिका निम्न प्रकार है। जैसे पाटयक्रम, विकास में योगदान, नये पाठयक्रम को लागु करना, नव प्रवर्तन एवं रचनात्मकमता का वातावरण बनाना, आजीवन कौशल और ज्ञान विकसित करना।

शिक्षक शिक्षण कार्य के अन्तर्गत अनेक विधियों का प्रयोग करता है इनमें से कुछ विधियां परम्परागत विधियों के अन्तर्गत व कुछ अपरम्परागत अर्थात नवीन विधियों के अन्तर्गत आती है। इनमें से पारंपरिक शिक्षण पद्घतियां अक्सर असंगत परिणाम देती है। शिक्षा के निरंतर विकास के साथ शिक्षक नवीन विधियों के तलाश में है जो छात्रों को आकर्षित करे और सीखने के परिणामों में वृद्घि करे तथा स्थाई ज्ञान प्राप्त करने मे सहयोगी होवे। इसी कारण हमारी नई शिक्षा नीति ने नवीन शिक्षण विधियों के प्रयोग पर बल दिया हैं यह नवीन विधियां विभिन्न शिक्षण शैलियों को अपनाती है और विषय वस्तु को समृद्घ समझ प्रदान करती है। नीचे निम्न नवीन विधियॉहै जो शिक्षण को प्रभावशाली बनाती है।

- **फ्लिपप्ड क्लासरूम मॉडलः–** यह विधि पारंपरिक शिक्षण संरचना को बदल देती है। इसके अन्तर्गत विडियों या पठन सामग्री के माध्यम से सामग्री वितरित की जाती है। कक्षा कक्ष में व्याखान प्रस्तुत नहीं किया जाता है। कक्षा कक्ष का समय चर्चा, समस्या समाधान और संवादात्मक गतिविधियों के लिये समर्पित

होता है। यह विधि सक्रिय सीखने का बढ़ावा देतीतथा जो कुछ उन्होनें सीखा है उसे स्वायत रूप से लागु करने की अनुमति मिलती है। इसके परिणामस्वरूप बेहतर समझ और एक जीवंत सीखने का माहौल बन जाता है साथ ही शिक्षकों को प्रत्येक छात्र को व्यक्तिगत रूप मे अधिक देखभाल करने मे सक्षम बनाया जा सकता है।

- **परियोजन आधारित शिक्षा :– (पी बी एल)** में छात्र वास्तविकदुनिया तथा व्यावहारिक परियोजनाओं में संलग्न से जुड़कर जटिल समस्याओं के समाधान के लिये ज्ञान का अनुप्रयोग करते है। रटकर याद करने के बजाय, छात्र सहयोग करते है, जांच करते है और ठोस समाधान करते है। पी बी एल ना केवल आलोचनात्मक सोच और समस्या का समाधान करते है बल्कि रचनात्मकता, अनुकूलनशीलता, सहयोग, समय प्रबन्ध और प्रस्तुति कौशल को भी पोषण प्रदान करता है। छात्र प्रोजेक्ट की गहराई में उतरते है जिससे विषय पर गहरी पकड़ बन जाती हे जो सीखने को सार्थक व प्रभावशाली बनाती है। शिक्षक कक्षा के सिद्घान्त को व्यावहारिक परिदृश्यों से जोड़ देता है। उदाहरण के लिये छात्र पर्यावरणीय परियोजनाओं, ऐतिहासिक पुनः मूल्याकंन आदि का पता लगाता है।
- **सरलीकरणः–**गेमिफिकेशन शैक्षिक प्रक्रिया में खेल मजुदार तत्वों को शामिल करता है। शिक्षक एक मजेदार लेकिन शैक्षणिक रूप से उपयोगी अनुभव को बढ़ावा देता है इस विधि में स्वस्थ्य प्रतिस्पर्धा को प्रोत्साहित करते है। प्रतिस्पर्धा और पुरूस्कारों की आंतरिक अप्रोच का लाभ उठाकर इस विधि को शैक्षिक लक्ष्यों पर ध्यान केन्द्रित करते हुये सीखने को आनंददायक बनाते है। यह विधि छात्रो को सक्रिय व इसकी भागीदारी को बढ़ावा देती है।
- **सहकर्मी शिक्षण और सहयोगात्मक शिक्षणः–** इस विधि में छात्र को शिक्षक की भूमिका निभाने की अनुमति मिलती है। अवधारणाओं को स्पष्ट करने,

समस्याओं का समाधान करने, एक दुसरे को शिक्षित करने में तथा समूहों में कार्य करने से ना केवल समझ विकसित होती है बल्कि संचार कौशल, सहानुभूति, सहयोग की भावना विकसित होती है। यह विधि कक्षा के भीतर साझा शिक्षण को प्रोत्साहन देती है और एक सहायक समावेशी वातावरण का निर्माण करती है।

- **सुकराती सेमीनारः—**सुकराती सेमीनार छात्र संचालित विधि है। इस विधि में आलोचनात्मक सोच ओर गहन पाठ समझ को बढ़ावा देती है। इस विधि में रचनात्मक संवाद क माध्यम से छात्र सीखता है तथा प्राप्त ज्ञान स्थायी होता है।
- **आउटडोर और अनुशासनात्मक शिक्षाः—** इस विधि में सीखने के माहौल को बाहर स्थानांतरित करने से शिक्षा में गहराई से सुधार हो सकता है। इस विधि में छात्र ऐतिहासिक स्थलों, स्थानीय पार्को का प्रयोग करता है तथा सैद्घान्तिक अवधारणाओं को वास्तविक दुनियां के परिदृश्यों में अनुवादित करता है। इस विधि के द्वारा बाहरी और अनुभवनात्मक शिक्षा अवलोकन और आलोचनात्मक सोच से लेकर सहयोग और रचनात्मक, ढेर सारे कौशल को परिष्कृत करती है।
- **पृच्छा आधारित अधिगतः—**इस विधि के माध्यम से छात्र की अन्वेषण या खोज करने की क्षमता विकसित होती है।
- **वर्चुअल टेक्नोलोजीः—**शिक्षण मे वर्चुअल टेक्नोलोजी के माध्यम से पाठयक्रमों में डिजिटल पहलुओं के लिये एक बेव आधारित मंच है जिससे छात्रों को ज्ञान प्रदान करके शिक्षण को प्रभावी बना सकते है।

निष्कर्षः—

नवीन शिक्षण तकनीके शिक्षा में जान फूंकनी है।कक्षाओं में उत्साह, जुड़ाव और प्रभावकारिता भी हैं।इन विधियों के प्रयोग से छात्रों में आलोचनात्मक सोच व

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 12, December 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

रचनात्मक अभिव्यक्ति पर जोर देकर यह विधियां छात्रों को शिक्षा और भविष्य की गतिविधियों में सफलता के लिये तैयार करती है। इसी के साथ हमारी नई शिक्षा नीति इन विधियों के प्रयोग पर बल देती है।

संदर्भ सूची

- जीत, योगेन्द्र भाई (2006). शिक्षा में नवाचार और नवीन प्रवृत्तियाँ, आगरा :विनोद पुस्तक मन्दिर।
- हकीम, एम.ए. और अस्थाना, विपिन (1994). मनोविज्ञान की शोध विधियाँ. आगरा : विनोदपुस्तक मंदिर।
- व्यास, हरिशचन्द्र. (2001). हम और हमारी शिक्षा. जयपुर : पंचशील प्रकाशन चौड़ा रास्ता।
- त्रिवेदी, आर.एन. एवं शुक्ला, डी.पी. (2008). रिसर्च मैथडोलॉजी. जयपुर : कॉलेज बुक डिपो।